Research Innovator: International Multidisciplinary Peer-Reviewed Journal
ISSN: Print: 2395-4744 www.research-innovator.com ISSN: Online: 2348-7674

बौद्ध धर्म वि व के दे ाों में

कामेश्वर प्रसाद

नव नालन्दा महाविहार (मानित वि वविद्यालय), नालन्दा (बिहार),भारत

सारां ा

भारत में ही नहीं बल्कि वि व में बौद्ध युग एक अमर युग रहा है और रहेगा। धर्म के नाम पर प ाुओं के खून से कर्मकाण्डी ब्राह्मणों के हाथ लाल रहा करते थे, उस समय बुद्ध अवतरित हुए दया और भाांति की आवाज उठाई।

बौद्ध धर्म अंधवि वास और रूढ़िवादिता पर नहीं वि वास करती बल्कि प्रज्ञा, भील, मैत्री एवं करूणा पर निर्भर है इन्हीं वि ोशताओं के कारण बौद्ध धर्म श्रीलंका, वर्मा, कोरिया, जावा, सुमात्रा, इत्यादि दुनियाँ के दे ाों में दृश्टिगोचर होता है, बौद्ध धर्म ने ही आदमी के अन्दर छिपी हुई सामर्थ को जगाने का कार्य किया, भारत दे ा ने राजचिन्ह के रूप में बौद्ध धर्म प्रतीक को ही अपनाया। डॉ0 अम्बेडकर से कभी किसी ने प्र न करने का साहस नहीं किया कि हिन्दू धर्म को त्याग कर बौद्ध धर्म क्यों अपनाया आखिर क्यों? कोई भी व्यक्ति गोत्र अथवा धन से श्रेश्ठ नहीं हो सकता बल्कि, उत्तम कर्म, विद्या और भील से होता है।

बौद्ध संस्कृति, वांगमय के अलावा कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया, इतिहास के कालक्रमानुसार मौर्यकाल, भुंगकाल, कुशाणकाल, गुप्तकाल, हर्शकाल, एवं पाल काल आते है। पाखंड़ियों एवं कर्मकाण्डियों के अत्याचारों के कारण बौद्ध भिक्षु, बौद्ध धर्म के ग्रंथो को नेपाल, भूटान, तिब्बत इत्यादि दे ाों में जहाँ–जहाँ लेकर भागे वहाँ–वहाँ बौद्ध साहित्य राजकीय पुस्तकालयों एवं बौद्ध मठों के संरक्षण में सुरक्षित रहा, और भारत में विलुप्त होता रहा। बुद्ध काल में बड़ें–बड़ें प्रकाण्ड विद्वान हुआ करते थे उस समय बुद्ध अपनी वाणी अव य ही कुछ तो लिखे होगें या लिखवायें होगें, यह कहना उचित प्रतीत नहीं होगा कि बुद्ध अपनी वाणी कुछ नहीं लिखें या उस समय नहीं लिखवाये आज के काल से अनुमान लगाया जा सकता है।

भारत में बौद्ध युग भी एक अमर युग था। ईस्वी सदी के 600 वर्श पूर्व जब समस्त भारत में धार्मिक आडम्बर और धार्मिक पाप अपनी सम्पूर्ण कालाओं पर था, जिस समय धर्म के नाम पर असंख्य मूल प ाुओं के रक्त से कर्मकाण्डी ब्राह्मणों के हाथ लाल रहते थे और जिस समय भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक अभागे प ाुओं की हाय भर रही थी, उस समय बुद्ध भारत में अवतरित हुए भाोक संताप से भरी पृथ्वी पर सबसे पहले उन्होंने दया और भाांति की आवाज उठायी। दुःख और उसके कारणों का निरूपण किया और उत्कृश्ट त्याग और सन्यास के मार्गों का उद्घाटन किया। हम यह सहज ही अनुमान लगा सकते है कि तत्कालीन समाज में जहाँ वैदिक धर्म एवं ब्राह्मणों की बाहुल्यता प्रगाढ़ रूप से थी वहाँ कोई अन्य धर्म को स्थापित करना एवं उसे विस्तृत रूप देना आसान कार्य न था परन्तु बुद्ध की करूणामय वाणी तथा सबको समान अधिकार देना, बौद्ध धर्म को स्थायी एवं व्यापक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

बौद्ध धर्म अपनी धार्मिक मान्यताओं एवं नैतिक व मानवीय मूल्यों और दा ार्निक वि ोशताओं के कारण जगत प्रसिद्ध हुआ। यथार्थ में इसकी आधारि ाला किसी भी प्रकार के अंधवि वास एवं रूढ़िवादिता पर नहीं बल्कि प्रज्ञा, भील, मैत्री और करूणा पर निर्भर करती है। इन्हीं वि ोशताओं के कारण बौद्ध धर्म भारत की सीमाओं को लांघ कर पड़ोसी दे ाों में ही नहीं बल्कि वि व के दुरस्थ दे ाों में फैल गया और दुनिया का महत्वपूर्ण धर्म बन गया। आज यह धर्म श्रीलंका, वर्मा, थाईलैण्ड, कोरिया,

जापान, ताइवान आदि दे ाों का राश्ट्र धर्म बना हुआ है। इसके अतिरिक्त चीन, इण्डोने िाया, मालद्वीप, जावा, सुमात्रा (सुवर्णद्वीप), बालाद्वीप, इण्डोचीन, अफगानिस्तान, तुर्कीस्तान, मंगोलिया, तिब्बत आदि दे ाों में बौद्ध धर्म का व्यापक विस्तार हुआ। आज इसका प्रभाव वि व के अनेक दे ाों में दृश्टिगोचर होता है।

बुद्ध के जन्म के 2500 वर्श से अधिक व्यतीत हो चुके है लेकिन फिर भी उनकी महानतम् उपलब्धियों के कारण आधुनिक विचार को वैज्ञानिकों और साहित्यकारों ने अनेक प्र ास्तियाँ की है। श्री आर0 जे0 जैक्सन का कहना है कि बुद्ध की ि ाक्षाओं का अनुपम रूप भारतीय धार्मिक विचारधारा के अध्ययन से ही स्पश्ट होता है। बौद्ध धर्म ने आदमी के अन्दर में जो सामर्थ्य छिपी हुयी है उसकी ओर ध्यान आकर्शित किया। बौद्ध धर्म ने ही हमें प्रथम बार चित्त को सही रास्ते पर चलने के ि ाक्षा में अग्रसारित किया है।

छठी भाताब्दी ईसा पूर्व जिस बौद्ध धर्म का अभ्युदय हुआ है उसकी विकासोन्मुख प्रक्रिया धूमिल नहीं हुई है बल्कि आज भी दिन–प्रतिदिन फल–फूल रही है। और सदैव फलती–फुलती रहनी चाहिए ताकि सभी मानव को समान अधिकार मिलता रहे। आज भी बौद्ध तीर्थों का द ार्शन पूजन करने, दे ा–विदे ा से बौद्ध भिक्षु एवं श्रद्धालु आते हैं तथा बड़ी श्रद्धा एवं वि वास के साथ पूजा–अर्चना करते हैं। भारत ने अपने राजचिन्ह् के रूप में बौद्ध प्रतीक को ही ग्रहण किया तथा वह भाान्ति एवं सह–अस्तित्व के सिद्धान्तों का पोशक बना हुआ है। आज भी बौद्ध धर्म में लोग समायोजन कर रहे हैं और करते रखना चाहिए जो बौद्ध धर्म के महत्व की और भी स्थायी एवं मजबूत रूप प्रदान करता है। 2500 वर्श व्यतीत हो जाने के बाद भी डॉ0 भीमराव अम्बेडकर हिन्दू धर्म को त्याग कर बौद्ध धर्म अपनाया था क्यों? इस पर प्र न पूछना चाहिए था डॉ0 अम्बेडकर से या उनके अनुयायियों से लेकिन भारत में किसी को प्र न करने का साहस नहीं हुआ आखिर क्यों?

भारतीय संस्कृति मूलतः दो संस्कृतियों का समन्वित रूप है। एक वैदिक संस्कृति और दूसरी श्रमण संस्कृति। वैदिक संस्कृति ब्राह्मण धर्म की पृश्ठभूमि से उद्भूत हुयी है। जबकि श्रमण संस्कृति सम भाब्द के विविध रूपों अथवा अर्थों पर आधारित है। वैदिक संस्कृति में परतन्त्रता, ई वरालम्बन, स्वावलम्बन और आत्मा की सर्वोच्च भाक्ति पर वि वास करती है।

श्रमण संस्कृति, श्रमण भाब्द श्रम धातु से निश्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है उद्योग करना, परिश्रम करना। पालि–प्राकृत भाशा में इसी भाब्द को सम कहा गया है जो भाम (ाान्ति) अथवा सम (समानता) धातु से निर्मित है। अतः श्रमण संस्कृति श्रम, भाम और सम के मूल सिद्धान्तों पर आधारित परम्परा है। ई वर मार्ग द्रश्टा है, सृश्टि कर्ता–धर्ता नहीं। चाहे ब्राह्मण हो या क्षत्रिय, वै य हो या भाूद्र सभी को आत्मचिंतन एवं मुक्ति प्राप्त करने का समान अधिकार है। कोई भी व्यक्ति मात्र गोत्र अथवा धन से श्रेश्ठ नहीं हो सकता उसकी श्रेश्ठता तो उसके उत्तम कर्म से, विद्या व भाील से है। इस प्रकार समानता और अहिंसा श्रमण संस्कृति की मूलभूत वि ोशतायें है। बुद्ध इसी संस्कृति के पोशक थे।

श्रमण संस्कृति का उद्भव और उसकी प्राचीनता एक महत्वपूर्ण विशय है। इस संदर्भ में यहाँ अधिक कहने की आव यकता नहीं है। पर यह नि ि चत है कि श्रमण संस्कृति वैदिक संस्कृति के बाद की नहीं है। मोहनजोदड़ों और हड़प्पा के उत्खनन में प्राप्त कुछ यौगिक मुद्राएं, वैदिक साहित्य के व्रात्य तथा वातर ाना मुनिगण, वेदों व पुराणों के ऋशभदेव, तथा पालि साहित्य में प्राप्त लगभग 24 जैन तीर्थंकरों के नामोल्लेख यह करने को बाध्य करते है कि श्रमण संस्कृति वैदिक संस्कृति की अपेक्षा प्राचीनतर तो अव य है।

बौद्ध संस्कृति क्या है ये समझने से पूर्व हमें यह जानना आव यक है कि संस्कृति क्या है? संस्कृति भाब्द मूलतः संस्कृति (सम+कृत) के

आधार पर निश्पन्न है किंतु अर्थ की दृश्टि से यह सर्वथा नवीन अर्थ चेतना से अन्वित है। संस्कृति भाब्द सम, उपसर्ग तथा कृ धातु के संयोग से व्युत्पन्न है जो इन अर्थों का प्रत्यायक है – परिश्करण, परिमार्जन, सम्यक रूपेण निर्माण। प्राचीन ग्रंथों में संस्कृति भाब्द कही नहीं मिलता। कहा जाता है कि पा चात्य दे ों में दो–तीन द ाकों में सोचने की जो प्रवृत्ति विकसित हुई है संस्कृति अर्थात् कल्चर की अवधारणा इसी प्रवृत्ति की देन है। महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन '' बौद्ध संस्कृति के प्रारम्भ में लिखते है'' संस्कृति वस्तुतः दे ा जाति से संबंधित है, धर्म के साथ उसका नाता जोड़ना गौण रीति से ही हो सकता है। जाति के साथ संस्कृति या संस्कार का संबंध वैसे ही है जैसे नये घड़े में घी या तेल भर कुछ दिन रखकर उसे निकाल देने पर घड़े के भीतर प्रविश्ट स्नेह का अं ा बचा रहता है। एक पीढ़ी आती है वह अपने आचार, रूचि–अरूचि, कला, संगीत, भोजन या किसी और आध्यात्मिक धारणा के बारे में कुछ स्नेह की मात्रा अगली पीढ़ी के लिए छोड़ जाती है। एक पीढ़ी के बाद दूसरे, दूसरी के बाद तीसरी और आगे बहुत सी पीढ़ियाँ आती–जाती रहती है और सभी अपना प्रभाव या संस्कार अपने से अगली पीढ़ी पर छोड़ती जाती है, यही प्रभाव (संस्कार) संस्कृति है। नालन्दा वि वकोश में संस्कृति भाब्द का तात्पर्य ''किसी व्यक्ति, जाति, राश्ट्र आदि की वे सभी बातें जो उसके मन, रूचि, आचार–विचार, कला–कौ ाल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती है उल्लिखित है।'' समाज ाास्त्रीय दृश्टि से संस्कृति के दो अंग होते है प्रथम अभौतिक संस्कृति और दूसरा भौतिक संस्कृति। अभौतिक संस्कृति के अंतर्गत श्रमणो द्वारा सृजित एवं प्रतिश्ठापित धर्म, द र्शन, नीति ाास्त्र, तर्क ाास्त्र और साहित्य आदि आते हैं। भौतिक संस्कृति के अंतर्गत विज्ञान और कला के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियाँ आती है। श्रमण संस्कृति की इन दोनों सांस्कृतिक क्षेत्रों में महान एवं वि वविख्यात उपलब्धियाँ है। यदि सही मायने में देखा जाय तो भारतीय संस्कृति की अवधारणा बौद्ध धर्म की ही देन है।

इतिहास की दृश्टि से बुद्ध की विचारधारा से मिलती–जुलती विचारधारा वाले अन्य श्रमण लोग भी थे। यह सब मिलकर श्रमण संस्कृति कहलायी। बुद्ध इनके नेता थे, यही संस्कृति भारतीय संस्कृति का प्रधान बनी। भक्ति, ज्ञान और कर्म भारतीय संस्कृति का प्रधान बनी। भक्ति, ज्ञान और कर्म भारतीय संस्कृति के तीन प्रवाह माने जाते हैं। इनके विकास में बौद्धों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। इसी की प्रेरणा से बौद्धों ने बड़े–बड़े काव्य ग्रंथ लिखे, कथायें लिखी और मूर्तिकला, वास्तुकला आदि विविध कलाओं का विकास किया। बुद्ध की मूर्तियों में जो भाांति, सौम्यता झलक रही है उसमे सारी आध्यात्मिकता को पत्थर पर तरा ा कर उतार देना, यह एक आ चर्य से कम नहीं। तिब्बत, चीन, जापान के चित्रों में किस प्रकार आध्यात्मिकता उभारी गयी है, यह है भारतीय संस्कृति जिसे हमें संजोकर रखना है।

भारतीय संस्कृति की देन जहाँ वि ााल वांगमय के रूप में है वहीं बौद्ध संस्कृति ने वांगमय के अलावा कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। संस्कृति के मुख्य तीन सोपान माने जाते है, साहित्य, ि ाक्षा और कला।

बौद्ध साहित्य :–

बुद्धकाल साहित्यिक गतिविधियों के लिए अति महत्वपूर्ण माना जाता है। बौद्ध साहित्य से हमारा तात्पर्य बौद्ध वांगमय से हैं साहित्य भाब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है, (1) प्रथम साहित्य का अर्थ सीमित है जो रचनात्मक एवं कलात्मक साहित्य है तथा जो रचनात्मक होता है एवं जिसके द्वारा लोकोत्तर आनन्द की अनुभूति होती है। (2) दूसरा अर्थ अधिक व्यापक है जिसके संचित ज्ञानरा ा का समस्त भण्डार समाहित होता है। इसी को दूसरे भाब्दो में वांगमय कहा गया है। इसके अंतर्गत रचनात्मक या कलात्मक साहित्य तथा अतिरिक्त ज्ञान–विज्ञान से सम्बद्ध समस्त विद्यायें परिगणित होती है। इस तरह धर्म, द र्शन,

भाशा भाास्त्र (व्याकरण), ि ाक्षा, नीति, आयुर्वेद, ज्योतिश विज्ञान, पुराण भाास्त्र, इतिहास, कला, विज्ञान तथा प्रविधि आदि सभी भाास्त्र इसमें समाहित हो जाते हैं।

अंग्रजी भाशा में साहित्य और वांगमय दोनों के लिए एक ही भाब्द ''लिटरेचर'' का प्रयोग होता है। अंग्रेजी के इस भाब्द के अनुवाद के कारण ही हिन्दी में साहित्य के मूल अर्थ के साथ–साथ उसके व्यापक अर्थ का बोध होता है। इस कारण यहाँ स्पश्ट कर देना आव यक था कि बौद्ध साहित्य से हमारा तात्पर्य उस बौद्ध वांगमय से है जिसके अंतर्गत बौद्ध कवियों द्वारा लिखित अथवा बौद्ध धर्म से सम्बद्ध विशयों पर अन्य विद्वानों द्वारा लिखित काव्य, नाटक, कथा आख्यायिका आदि के साथ–साथ बौद्ध धर्म से सम्बद्ध समस्त धर्म ग्रंथों, अवदान–कथाओं तथा उपदे ाात्मक आख्यानें का भी समावे ा हो जाता है।

बौद्ध वांगमय अतिमहत्वपूर्ण है। इसके अंतर्गत ग्रंथों की प्रधानता है। यह वि ााल वांगमय अनेक भाशाओं और बहुत बड़े कालखण्ड से निर्मित होता रहा। यह कालखंड लगभग 1500 वर्शों तक रहा। इसके अंतर्गत इतिहास के कालक्रमानुसार मौर्यकाल, भुंगकाल, कुशाणकाल, गुप्तकाल, हर्शकाल एवं पाल काल आते है। इस लम्बी काल अवधि में बौद्ध धर्म का चरमोत्कर्श भी हुआ और ह्रास भी। जो बौद्ध धर्म कुशाण काल तक न केवल समस्त भारत में अपितु लंका, मध्य ए ि ाया और चीन तक पहुँच गया था, वही गुप्तकाल में भारत में ह्रास होने लगा। जिन–जिन दे ाों मे यह धर्म हजारों वर्श तक वर्तमान था उन सब की अपनी–अपनी भाशाओं में बौद्ध वांगमय की रचना होती रही। भारत से बौद्ध धर्म के ब्राह्मण वादियों ने उच्छेंद किया और वि ााल भारतीय बौद्ध वांगमय को यहाँ से विलुप्त कर दिया। भारत के जिन वि ााल ग्रंथागारों जैसे – सारनाथ, नालन्दा, विक्रम ाीला में यह साहित्य संग्रहित था, जिन्हें ऐसा लगता कि ब्राह्मण वादियों ने जला डाला और मुस्लिम बख्तियार खिलजी का नाम उछाल दिया जबकि बख्तियार खिलजी के आक्रमण का तिथि भी अलग है इन ग्रंथागारों को इसलिए जला दिया गया कि बौद्ध धर्म पाखंडियों, कर्मकांडियों एवं प ा बलियों का विरोध कर रहा था और समता समानता का ज्ञान दे रहा था बौद्ध धर्म दुनियाँ में चरमोत्कर्श पर पहुँच गया था इसलिए प्राचीन से लेकर आज तक वि व में बौद्ध धर्म फैला हुआ है। बौद्ध भिक्षु अपने साथ बौद्ध धर्म के जिन अमूल्य ग्रंथों को लेकर हिमालय क्षेत्र के विभिन्न दे ाों, नेपाल, सिक्किम, भुटान, तिब्बत आदि दे ाों में चले गये वहाँ वह बौद्ध साहित्य राजकीय पुस्तकालयों और बौद्धमठों के संरक्ष्ज्ञण में सुरक्षित रहा।

इस वि ााल बौद्ध वांगमय की रचना कब से प्रारम्भ हुई यह बताना अत्यंत कठिन कार्य है। गौतम बुद्ध के समय लिखने की प्रथा प्रचलित थी, इसमें संदेह नहीं किया जा सकता है क्योंकि बुद्ध की मृत्यु के प्रायः दो सौ वर्शों बाद सम्राट अ ाोक ने अपने उपदे ाों को साम्राज्य के विभिन्न भागों में ि ालाओं पर लिखवाया था। लेखन की यह विधि केवल 200 वर्शों में ही नहीं विकसित हुई होगी। अतः नि चय ही गौतम बुद्ध के समय लिखने की प्रथा विद्यमान रही। फिर भी इन ग्रंथों को बुद्ध के स्वयं लिखने या उनके काल में उनके ि ाश्यों द्वारा लिखने का प्रमाण अभी नहीं मिला है। इतना तो अनुमानतः आव यक कहा जा सकता है कि जब उस समय बौद्ध धर्म इतना चरमोत्कर्श पर था और बड़े–बड़े प्रकांड विद्वान थे तो बुद्ध अपनी वाणी अव य ही कुछ तो लिखे होगे और लिखवाये होगें आज के समय से अनुमान लगाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. आचार्य चतुर सेन भाास्त्री, बुद्ध और बौद्ध धर्म, पृ0 75
2. डॉ0 संघमित्रा चौधरी, भारत में बौद्ध धर्म का उत्कर्श एवं ह्रास, पृ0 10

3. डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, भगवान बुद्ध और उनका धर्म, भारतीय बौद्ध ि ाक्षा परिशद श्रावस्ती, 1970, पृ0 463
4. भागचन्द्र जैन, बौद्ध संस्कृति का इतिहास, आलोक प्रका ान, नागपुर, प्रथम संस्करण, 1972, पृ01
5. भागचन्द्र जैन, बौद्ध संस्कृति का इतिहास, पृ0 2
6. डॉ0 जगन्नाथ उपाध्याय, भारतीय संस्कृति को बौद्ध देन, बौद्ध सभा दिल्ली, द्वितीय, संस्करण 2000 पृ0 1
7. राहुल सांस्कृत्यायन, बौद्ध संस्कृति, कोलकाता 1953, पृ0 3
8. नवल जी, (सम्पादक), नालन्दा वि ाल भाब्द सागर, 1982, पृ0 1388
9. जगन्नाथ उपाध्याय, भारतीय संस्कृति को बौद्ध देन, पृ0 10
10. परमानन्द सिंह, बौद्ध साहित्य में भारतीय समाज, का ाी विद्यापीठ वाराणसी, प्रथम संस्करण 1996, पृ0 10
11. परमानन्द सिंह, बौद्ध साहित्य में भारतीय समाज, पृ0 11
12. वही, ऊपर, पृ0 12
13. बुद्धघोश, अट्ठसालिनी, देवनागरी संस्करण पुना, 1942 पृ0 23
14. विनयपिटक, अनुवादक–राहुल सांस्कृत्यायन, पृ0 541

RESEARCH INNOVATOR